नञ् तत्पुरुष :- जिस समस्तपद में पहला पद नकारात्मक (अभावात्मक) हो, उसे नञ् तत्पुरुष कहते हैं। कभी या निषेध को सूचित करने के लिए 'अ या अन्' लगाकर नञ् तत्पुरुष होता है। जैसे -

समस्तपद	विग्रह
अनचाही	न चाही
अनदेखी	न देखी
अनंत	न अंत
अयोग्य	न योग्य
अन्याय	न न्याय
अमर	न मर
अनिच्छा	न इच्छा
अनादि	न आदि
अब्राह्मण	न ब्राह्मण
अधर्म	न धर्म

② ख (कर्मधारय समास)

जिस समास में पहला पद विशेषण या उपमान हो और दूसरा पद विशेष्य या उपमेय हो और दोनों में संबंध हो, वहाँ कर्मधारय समास होता है। कर्मधारय समास में पहला पद उपमावाची होता है। जैसे-

(क) विशेषण - विशेष्य कर्मधारय

समस्त पद	विग्रह
प्रधानाध्यापक	प्रधान है जो अध्यापक
महाजन	महान है जो जन
महात्मा	महान है जो आत्मा

Scanned by CamScanner

पीताम्बर — पीला है जो अंबर
नीलकंठ — नीला है जो कंठ
कुबुद्धि — बुरी है जो बुद्धि
दहीबड़ा — दही में डूबा हुआ बड़ा

(ख) उपमेयोपमान कर्मधारय समास -

समस्तपद	विग्रह
कमलनयन	कमल के समान नयन
कुसुमकोमल	कुसुम सा कोमल
क्रोधाग्नि	क्रोध रूपी अग्नि
घनश्याम	घन के समान श्याम
विद्याधन	विद्या रूपी धन
प्राण प्रिय	प्राणों के समान प्रिय

(2) द्विगु समास

जहाँ समस्तपद के पूर्व पद में संख्यावाचक विशेषण होता है, वहाँ द्विगु समास होता है। उदाहरणतया -

समस्तपद	विग्रह
चवन्नी	चार आनों का समूह
चारपाई	चार पायों का समाहार
द्विगु	दो गायों का समाहार
पंजाब	पाँच आबों का समाहार
त्रिवेणी	तीन वेणियों का समाहार
त्रिफला	तीन फलों का समाहार
दोपहर	दो पहरों का समाहार
सप्ताह	सात दिनों का समाहार
नवरत्न	नव रत्नों का समाहार

Scanned by CamScanner

③ बहुव्रीहि समास

जिस समास में न पूर्व पद प्रधान होता है, न उत्तर पद, बल्कि समस्त पद किसी अन्य पद का विशेषण होता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। उदाहरणतया -

चक्रपाणि	चक्र है हाथ में जिसके	- कृष्ण
निशाचर	निशा में विचरण करनेवाला	- (राक्षस)
चतुर्मुख	चार हैं मुख जिसके	- (ब्रह्मा)
मृगनयनी	मृग जैसे नयनों वाली	- (स्त्री)
कमलनयन	कमल जैसे नयनों वाला	- (राम)
दुधमुहाँ	मुँह में दूध है जिसके	- (बच्चा)
नीलकंठ	नीला है गला जिसका	(शिव)

④ (द्वंद्व समास)

जिस समास में दोनों खण्ड समान (प्रधान) हों, उसे द्वंद्व समास कहते हैं। सामासिक शब्द के दोनों खण्ड अर्थ की दृष्टि से स्वतंत्र होते हैं तथा इनके बीच का 'और' 'एवं' 'तथा' 'अथवा' आदि लुप्त हो जाता है।

जैसे - सुख और दुख —— सुख-दुख
उतार या चढ़ाव —— उतार-चढ़ाव
पाप या पुण्य —— पाप-पुण्य
पति और पत्नी — पति-पत्नी
माता और पिता — माता-पिता
स्वर्ग या नरक - स्वर्ग-नरक

(अन्तर)

सर्वप्रथम संधि और समास में अंतर देखिए -

Scanned by CamScanner

संधि और समास में अंतर

① संधि और समास बिल्कुल अलग होते हैं।
② संधि में वर्णों का मेल होता है जबकि समास में शब्दों का
③ कई शब्दों में संधि और समास दोनों होते हैं।
जैसे—

	समस्त पद	विग्रह
①	पीतांबर	पीला है अंबर जिसका (कृष्ण) [बहुव्रीहि समास]
①	पीतांबर	पीत + अंबर — [अ + अ = आ दीर्घ संधि]
②	सूर्योदय	सूर्य का उदय (तत्पुरुष समास)
②	सूर्योदय	सूर्य + उदय = अ + उ = ओ (गुण संधि)
③	पुस्तकालय	पुस्तक + आलय — अ + आ = आ (दीर्घ संधि)
	पुस्तकालय	पुस्तक के लिए आलय — तत्पुरुष समास

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर

कर्मधारय में दोनों पद विशेषण / विशेष्य या उपमान / उपमेय का संबंध होता है जबकि बहुव्रीहि में दोनों पद मिलकर किसी अन्य की और अर्थात संज्ञा की ओर संकेत करते हैं यानि विशेषता बताते हैं। जैसे—

Scanned by CamScanner

Date 10

समस्त पद		विग्रह	
① पीतांबर	–	पीला है जो अंबर	(कर्मधारय)
① पीतांबर	–	पीला है अंबर जिसका	– कृष्ण बहुव्रीहि
② श्वेतांबर	–	श्वेत है जो अंबर	(कर्मधारय)
② श्वेतांबर	–	श्वेत है अंबर जिसका	– सरस्वती बहुव्रीहि

Scanned by CamScanner

बहुव्रीहि और द्विगु में अंतर

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाची होता है जबकि बहुव्रीहि समास का संख्यावाची पहला पद और दूसरा पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं। उदाहरण –

	समस्तपद	विग्रह	
①	त्रिवेणी –	तीन वेणियों (नदियों) का समाहार	(द्विगु समास)
	त्रिवेणी –	तीन वेणियों (नदियों) का संगम स्थल (प्रयागराज)	(बहुव्रीहि समास)

	समस्तपद	विग्रह	
②	चतुर्भुज –	चार भुजाओं का समाहार	(द्विगु समास)
	चतुर्भुज –	चार भुजाएँ हैं जिसकी	(बहुव्रीहि समास)

	समस्तपद	विग्रह	
③	त्रिनेत्र –	तीन नेत्रों का समूह	= (द्विगु समास)
	त्रिनेत्र –	तीन नेत्र हैं जिसके (शिव)	(बहुव्रीहि समास)

Scanned by CamScanner